अनुक्रम

1. संपादकीय	रामप्रकाश झा	3
2. कक्कावलि	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	4
3. Awakening	Acharya Padmasagarsuri	5
4. नवांगीपूजा	गणि सुयशचंद्रविजयजी	8
5. पुस्तक समीक्षा	डॉ. कृपाशंकर शर्मा	27
6. गुरुपरंपरा	मुनि श्री न्यायविजयजी	29
7. समाचारसार	-	32

तुझने पूछूं हे सखी, मूरख केम जीवंत ।
पांच-सात भेगा मली धमोधम करंत ।। हस्तप्रत क्र. ८६०६८

हे सखी, मैं तुमसे पूछती हूँ कि मूर्ख का जीवन किस प्रकार बीतता है? मूर्ख व्यक्ति इकट्ठे होकर कोलाहल और धमाल करके अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

तुझने पूछूं हे सखी, पंडित केम जीवंत ।
पांच-सात मिली सांमटा, ग्यानगोष्ठी करंत ।। हस्तप्रत क्र. ८६०६८

हे सखी, पंडित का जीवन किस प्रकार बीतता है? ज्ञानी व्यक्ति इकट्ठे होकर ज्ञानगोष्ठी करके अपना जीवन सार्थक करते हैं।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only